चक्रधर शुक्ल

दीप जलाओ

कूड़ा - करकट मत फैलाओ,
घर -आँगन को स्वच्छ बनाओ।
दूर भगेगा अंधकार फिर,
दीप जलाओ , दीप जलाओ।।

मुख पर अपने मास्क लगाओ,
निश्चित दूरी को अपनाओ।
खील-बताशा ,लाई लाकर,
हिल -मिल कर त्योहार मनाओ।।

लड्डू-पेड़ा घर में लाओ,
माँ -गणेश का भोग लगाओ।
याचक जब भी द्वारे आए,
उसको खाली मत लौटाओ।।

स्वागत में सबके मुस्काओ,
दीपों से घर -द्वार सजाओ।
घर -बाहर होगा उजियाला,
बच्चो बस फुलझड़ी छुड़ाओ।।

अंदर के रावण को मारो

अवगुण सीख रहे हो प्रतिदिन
तुम बाजी हारोगे ,
अपने अंदर के रावण को
फिर कैसे मारोगे ?

सीता हरण किया पापी ने
साधु - वेश में धोखा ,
राम -बाण जब चले समर में
नाभी - अमृत सोखा ।

रावण कितना महारथी था
फिर भी जीत न पाया,
लंका राख हो गयी उसकी
राक्षस -वंश सफाया ।

करते रहो कर्म तुम अपना
गीता का संदेश,
मिलकर पर्व मनाओ बच्चो
है यह पर्व विशेष ।